



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.445



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके
शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में अध्ययन

डॉ. नीलम यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर

एसएस जैन सुबोध महिला टीटी कॉलेज सांगानेर जयपुर

E-mail- partsjaipur@roshanlaljain.com, Mobile-9166138853

First draft received: 05.08.2025, Reviewed: 18.08.2025

Final proof received: 21.09.2025, Accepted: 28.09.2025

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक समुत्थानशक्ति का अध्ययन किया गया है। यह देखा गया है कि शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में विभिन्न कारकों का प्रभाव पड़ता है। परिणाम यह दर्शाते हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके शैक्षिक समुत्थानशक्ति के स्तर में विभिन्न कारकों के संदर्भ में अंतर पाया जाता है।

मुख्य शब्द:- माध्यमिक स्तर, शिक्षार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक समुत्थानशक्ति.

भूमिका

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। इसका उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक संतुलन की प्राप्ति भी है। एक शिक्षार्थी तभी पूर्ण विकसित नागरिक बन सकता है जब वह अपने जीवन से संतुष्ट, आत्मविश्वासी तथा प्रसन्न हो। शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास एवं उत्थान शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है, उस समय वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उसकी इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके परिपक्वता प्रदान करती है। शिक्षा बालकों में रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा वह केवल अपने वातावरण को अनुकूलन करने में ही समर्थ नहीं होता, वरन् वातावरण एवं प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है। शिक्षा ही मानव को असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है। वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को अपनी परिस्थिति तथा वातावरण के मध्य अनुकूलन करना सिखाती है। अतः शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व शैक्षिक समुत्थानशक्ति को शिक्षा की गुणवत्ता के एक महत्वपूर्ण सूचक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

यदि व्यक्ति के अंदर किसी क्षेत्र विशेष में अभिरुचि, योग्यता, अभिव्यक्ति क्षमता, कार्य क्षमता, सामाजिक कुशलता आदि गुणों की अधिकता है तो उसका संबंधित क्षेत्र में सकारात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है तथा उस क्षेत्र में शैक्षिक समुत्थानशक्ति भी अधिक होती है। शैक्षिक समुत्थानशक्ति के अधिक होने पर शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है। जबकि शैक्षिक समुत्थानशक्ति के कम होने पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

Resilience is "the core strength you use to lift the load of life." समुत्थानशक्ति में सकारात्मकता, आत्मसम्मान, कठोरता, आत्मप्रभावकारिता आशावाद, जोखिम लेना, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और निश्चितता का एक उच्च सहिष्णुता शामिल है। शैक्षिक समुत्थानशक्ति लोग चुनौतियों से पार पाने और समस्याओं के माध्यम से काम करने के लिए अपनी ताकत और सहायता करने को मजबूत बनाते हैं। समुत्थानशक्ति शिक्षार्थी को परिस्थितियों को स्वीकार करने और उनके अनुकूल होने और आगे बढ़ने का अधिकार देता है।

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार:- "समुत्थानशक्ति कठिन या चुनौतीपूर्ण जीवन के अनुभवों को सफलतापूर्वक अपनाने की प्रक्रिया और परिणाम दोनों को संदर्भित करता है।"

अमित सूद के अनुसार :- "यह शिक्षार्थियों की प्रतिकूल क्षमताओं का विकास करने में सहायक है।"

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। विभिन्न स्तरों के शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है तथा इन्हीं शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न कक्षाओं का पाठ्यक्रम निर्धारित होता है एवं इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। इन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति शिक्षार्थियों ने किस सीमा तक की है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि होती है। शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य शिक्षार्थियों द्वारा आयोजित ज्ञान, कौशल और योग्यता की मात्रा से है।

शैक्षिक उपलब्धि का मापन आवश्यक होता है जिसे शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण द्वारा आँका जाता है। शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जिससे अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षण व मानकीकृत परीक्षण भी शामिल है। किंतु विद्यालयों में सामान्यतः शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए विद्यालयों द्वारा समय-समय पर ली जाने वाली परीक्षाएं सर्वाधिक सरल, विश्वासनीय व प्रचलित है।

क्रो एंड क्रो (1956) "शैक्षिक उपलब्धि एक सीमा है जिस तक अधिगम पर निर्धारित क्षेत्र में लिए हुए अनुदेशन से अधिगमकर्ता को लाभ हुआ हो।"

चैपलिन (1956) "शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक कार्यों में कुशलता का विशेष स्तर है जो कि शिक्षकों तथा विशेषज्ञों द्वारा या दोनों के द्वारा मूल्यांकित किया जाता है।"

कार्टर गुड (1959) "शिक्षा शब्दावली ने उपलब्धि को विद्यालयी विषयों में विकसित कौशल व प्राप्त ज्ञान के रूप में परिभाषित किया है, सामान्यतः परीक्षणों में प्राप्त अंकों द्वारा दर्शाया जाता है।"

विद्यालय में औपचारिक शिक्षा के प्रारंभ से ही शैक्षिक उपलब्धि पर महत्व दिया जाता है। विद्यालय में अधिगमकर्ताओं का विभेदीकरण भी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर किया जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी का ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक विकास करना है और इस उद्देश्य को प्राप्त करने का मुख्य आयाम शैक्षिक उपलब्धि है। अच्छी शैक्षिक उपलब्धि सभी सफलताओं के लिए प्रवेश द्वार है।

शिक्षा आर्थिक विकास और मानव विकास की नींव है। इस लिए शिक्षा प्रणालियों को प्रभावित करने वाले संघर्ष और आपदाओं के जोखिम को रोकने या कम करने के प्रयासों को संस्थागत शैक्षिक समुत्थानशक्ति की नींव रखनी चाहिए। शैक्षिक समुत्थानशक्ति भी छात्रों के लिए बेहतर परिणामों की ओर ले जाती है क्योंकि यह छात्रों के विश्वास से संबंधित है कि उनके पास अपने पर्यावरण को प्रभावित करने की क्षमता है। शैक्षिक समुत्थानशक्ति प्रबल होने पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है जिससे शिक्षार्थी अपने जीवन में अग्रसर होता रहता है।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा शिक्षार्थी के मस्तिष्क को उच्च स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है और जीवन के हर पहलू को समझने के लिए सूझ-बूझ को विकसित करती है। शिक्षा मानवीय जीवन में व्यक्ति को जहां एक तरफ वातावरण से अनुकूलन करने एवं उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुए भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करके चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर और साहसी उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बना कर, उसका सर्वांगीण विकास करती है, वहीं दूसरी तरफ शिक्षा राष्ट्रीय जीवन में व्यक्ति के भीतर राष्ट्रीय एकता भावनात्मक एकता, सामाजिक कुशलता एवं राष्ट्रीय अनुशासन आदि भावनाओं को विकसित करके उसे इस योग्य बना देती है कि यह सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए राष्ट्रीय

हित को प्राथमिकता देने हेतु ओत-प्रोत हो जाता है। शिक्षा सामान्य एवं राष्ट्रीय जीवन में कार्य करती है जिससे व्यक्ति और समाज लगातार उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहते हैं। वर्तमान में यह देखने को मिलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थी समाज के साथ समायोजित नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनमें नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का कहीं न कहीं अपघटन हो रहा है। ऐसे वातावरण में माध्यमिक स्तर पर विभिन्न गतिविधियों जैसे-खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शैक्षणिक गतिविधियों के द्वारा शिक्षार्थियों में शैक्षिक समुत्थानशक्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का विकास किया जा सकता है।

शैक्षिक समुत्थानशक्ति के अभाव में शिक्षार्थी तनाव में रहने लगता है जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। वह अपने अंदर की प्रतिभाओं को विकसित नहीं कर पाता है। जिससे उसके मन में हीन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। वह अपना जीवन नीरसता में व्यतीत करने लगता है। शिक्षार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने के लिए विद्यालय में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन

किया जाता है। जिससे उसके मन से डर, भय, तनाव, हीन विचारों को दूर किया जा सके। इसके लिए शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करके उसमें सुधार किया जा सकता है। शैक्षिक समुत्थानशक्ति शिक्षार्थियों की आंतरिक और बाहरी सुरक्षात्मक कारकों द्वारा विद्यालय से जुड़ी शैक्षणिक असफलताओं, तनाव और अध्ययन के दबाव को दूर करने की क्षमता है। जिससे शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है और शिक्षार्थी की योग्यताओं का विकास होता है। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

गार्सिया-क्रेस्पो फ्रांसिस्को जे, फर्नांडीज अलोंसो रूबेन एवं मुनिज़ जोस (2021) "एकेडमिक रेजीलेंस इन यूरोपीयन कंट्रीस द रोल ऑफ टीचर्स फॅमिलीस एंड स्टूडेंट प्रोफाइल" अध्ययन में शिक्षार्थियों, परिवारों एवं शिक्षकों की गतिविधियों की उन विशेषताओं की पहचान करने का लक्ष्य रखा गया है जिनका शैक्षिक समुत्थानशक्ति पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों के 4,324 विद्यालयों के 1,17,539 चौथी कक्षा के शिक्षार्थी और 6,222 शिक्षकों पर अध्ययन किया। इसके अंतर्गत दो चरणों में दो-स्तरीय पदानुक्रमिक रैखिक मॉडल निर्दिष्ट किया। शिक्षार्थी की व्यक्तिगत और पारिवारिक पृष्ठभूमि चर एवं शिक्षण गतिविधि से संबंधित चर उपयोग किया। निष्कर्षतः पाया गया कि जिन शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत और पारिवारिक पृष्ठभूमि अच्छी है उनमें समुत्थानशक्ति का 62% और 130% अंक के बीच पाया गया। जिससे शिक्षार्थी में अध्ययन के प्रति अत्यधिक आत्मविश्वास पाया गया। विद्यालय की शिक्षण गतिविधियों से शिक्षार्थी की समझ और प्रतिबिंब पर ध्यान केंद्रित करने का समुत्थानशक्ति का प्रतिशत 62% अंक तक बढ़ गया।

यांग, शेंगली एवं वीरोंग वांग (2022) "द रोल ऑफ एकेडमिक रेजीलेंस, मोटिवेशनल इनटैनिसिटी एंड दियर रिलेशनशिप इन ई एफ एल लर्नर्स एकेडमिक अचीवमेंट" के अध्ययन में पाया कि कुछ सामाजिक प्रभावी कारक (जैसे सहकर्मी संबंध, माता-पिता की उच्च अपेक्षाएँ, शिक्षकों का ध्यान और दया आदि) सामाजिक-आर्थिक कारक (जैसे माता-पिता की शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक वर्ग स्तर पर वित्तीय योगदान आदि) और भावात्मक कारक (जैसे चिंता, आत्म-प्रभावकारिता, प्रेरणा आदि) शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और नीति निर्माताओं के निर्णय को समझने के लिए एक उपयुक्त संदर्भ प्रदान करने को प्रभावित कर सकते हैं। अकादमिक प्रेरक और शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर मौजूदा साहित्य को विकसित करने के लिए आगे के शोध के लिए सुझाव दिए गए।

शर्मा, सुरेंद्र कुमार (2021) "एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू जेंडर, सोशल केटिगरी एंड स्ट्रीम ऑफ स्टडी" के अध्ययन में पाया कि लिंग और सामाजिक श्रेणी के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं था लेकिन विभिन्न संकाय में अध्ययन कर रहे उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। विज्ञान संकाय में वाणिज्य तथा कला संकाय के शिक्षार्थियों की तुलना में शैक्षिक उपलब्धि का औसत काफी अधिक था।

सिंह, नीतू एवं चौधरी, विनय कुमार (2022) "माध्यमिक स्तरीय बच्चों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर कामकाजी एवं गैर-कामकाजी माताओं के प्रभाव का अध्ययन" में पाया गया कि कामकाजी माताओं के बच्चों के

व्यक्तित्व की तुलना में गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यक्तित्व में अंतर दिखाई पड़ता है। कामकाजी माताएँ गैर-कामकाजी माताओं की तुलना में अपने बच्चों को समय कम दे पाती हैं, जिसके कारण बच्चों के व्यक्तित्व में शील गुण की कमी पाई जाती है। परंतु गैर-कामकाजी माताएँ अपने बच्चों को पर्याप्त समय देने के कारण उनके व्यावहारिक जीवन में संतुलन बनाए रखने में पूर्ण सहयोग देती हैं। लेकिन कामकाजी माताओं के बच्चों की तुलना में गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गई।

समस्या कथन - उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक समुत्थानशक्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

*माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक समुत्थानशक्ति के स्तर में भिन्नता पायी जाती है।

* माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में भिन्नता पायी जाती है।

* माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्द

*शैक्षिक समुत्थानशक्ति:- मार्टिन एवं मार्श के अनुसार शैक्षिक समुत्थानशक्ति शिक्षार्थी की वहीं योग्यता है जिसमें वह विपरीत परिस्थितियों (सामाजिक, शैक्षणिक, तनाव, दबाव एवं कठिनाइयों) के बावजूद शैक्षिक रूप से सफल होने की क्षमता रखता है। मार्टिन एवं मार्श के अनुसार शैक्षिक समुत्थानशक्ति में मुख्यतः चार घटक शामिल हैं- आत्मविश्वास, नियंत्रण की भावना, संयम और प्रतिबद्धता। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक समुत्थानशक्ति से तात्पर्य मिहिर आर. मलिक एवं सिमरनजीत कौर द्वारा निर्मित एकेडमिक रेजीलेंस स्केल (2015) में उल्लेखित आयामों शैक्षणिक आत्मविश्वास, भलाई की भावना, अभिप्रेरणा, लक्ष्य प्राप्ति

की योग्यता, साथी समूह के साथ संबंध, संवेगात्मक प्रबंधन एवं शारीरिक स्वास्थ्य है।

*शैक्षिक उपलब्धि:- शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य किसी विषय या पाठ में शिक्षार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान या कुशलता के विशिष्ट स्तर से है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षार्थियों द्वारा 10वीं बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों से है।

शोध विधि:-समस्या की प्रकृति के आधार पर शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक समुत्थानशक्ति मापने हेतु:- Academic Resiliency Scale by Mihir R. Mallik and Simranjeet Kaur का प्रयोग किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि मापने हेतु:- माध्यमिक स्तरीय कक्षा 10 में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु उनके कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा के वार्षिक परिणाम को शिक्षार्थी शैक्षिक उपलब्धि सूचना प्राप्त प्रपत्र द्वारा किया गया।

अध्ययन के स्रोत

राजस्थान राज्य के जयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थी तत्वों के स्रोत के रूप में लिए गए हैं।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर शहर के राजस्थान राज्य शिक्षा बोर्ड से संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 10 में अध्ययनरत शिक्षार्थियों को जनसंख्या लिया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य शिक्षा बोर्ड से संचालित जयपुर शहर के राजकीय व निजी विद्यालयों का चयन सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 10-10 शिक्षार्थी लिए गए हैं। इस प्रकार चयनित 20 विद्यालयों से 600 शिक्षार्थी यादृच्छिक रूप से चयनित किए गए हैं।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक हैं।

विश्लेषण विधि

मुख्य परिकल्पना... माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। इस परिकल्पना के संदर्भ प्राप्त आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या इस प्रकार है—

तालिका

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में अंतर

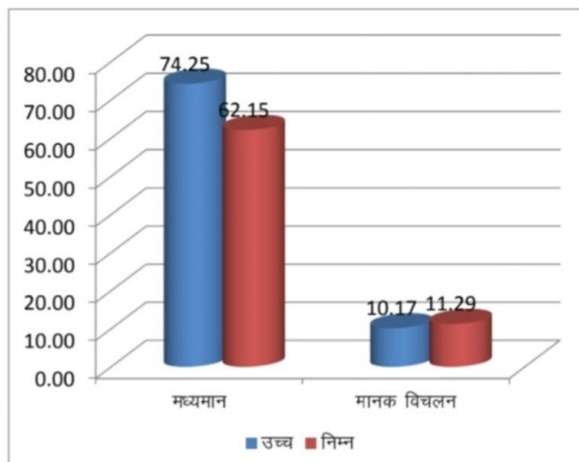
शैक्षिक समुत्थानशक्ति स्तर	शिक्षार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
उच्च	55	74.25	10.17	4.58	0.05 सार्थक स्तर पर अस्वीकृत
निम्न	25	62.15	11.29		

सार्थकता स्तर 0.05 पर की मान = 1.97

स्वतंत्रता अंश=78

ग्राफ

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में मध्यमान एवं मानक विचलन



माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में अंतर को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित प्रदत्तों से यह स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति वाले शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 74.25 व 62.15 तथा मानक विचलन 10.17 व 11.29 है। परिकलन द्वारा प्राप्त टी का मान 4.58. स्वतंत्रता के अंश 78 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए निर्धारित मान 1.97 से अपेक्षाकृत अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

क्रम संख्या	परिकल्पना	सार्थकता स्तर	परिकल्पना परिणाम
1.	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक समुत्थानशक्ति के स्तर में भिन्नता पायी जाती है।	-	स्वीकृत
2.	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में भिन्नता पायी जाती है।	-	स्वीकृत
3.	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।	0.05	अस्वीकृत

निष्कर्ष

* माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक समुत्थानशक्ति के स्तर में भिन्नता पायी गयी।

*माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी।

*माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके उच्च एवं निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के संदर्भ में सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य शिक्षार्थियों में शैक्षिक समुत्थानशक्ति एवं उपलब्धि को विकसित करना है अनुसंधान कार्य के परिणाम भावी नीति निर्धारण की आधार शिला बनते हैं। जिससे शिक्षा के क्षेत्र में अथवा समाज और राष्ट्र के लिए ऐसा योगदान प्रस्तुत करता हो जो कि दूरगामी समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों की शैक्षिक समुत्थानशक्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को जानने की दृष्टि से एक सर्वेक्षण के रूप में किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा शिक्षार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान एवं विषम परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति का विकास कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षक के लिए भी उपादेयता रखता है। शिक्षक शिक्षार्थियों की निम्न शैक्षिक समुत्थानशक्ति के कारणों को जानकर उसमें सुधार कर सकेंगे। प्रस्तुत शोध अभिभावकों के लिए भी उपादेयता रखता है। अभिभावक शिक्षार्थी में उच्च शैक्षिक समुत्थानशक्ति के विकास के लिए प्रयास करेंगे। शैक्षिक समुत्थानशक्ति के उच्च एवं निम्न प्रभाव से शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। अतः यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के साथ-साथ प्राथमिक, उच्च माध्यमिक स्तर एवं उच्च शिक्षा के शिक्षार्थियों की शैक्षिक समुत्थानशक्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के विकास में भी सहायक सिद्ध हो सकेगा।

शोध का परिसीमन

*यह अध्ययन केवल राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के शिक्षार्थियों तक ही सीमित है।

*यह अध्ययन राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों तक सीमित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

*बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1963). रिसर्च इन एजुकेशन, प्रैक्टिस हॉल ऑफिस इंडिया, नई दिल्ली।

*पाठक, पी.डी. (1987). भारतीय शिक्षा व उसकी समस्याएं. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

*कपिल, एच. के. (1994). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ. भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा

*वर्मा, जी. एस. (1996). आधुनिक भारतीय समाज व समस्याएं. लायल बुक डिपो, मेरठ।

*गार्सिया -क्रेस्पों, एफ. जे. एवं फर्नांडीज, ए. आर. एवं मुनिज, जे. (2021). एकेडमिक रेजिलेंस इन यूरोपीयन कंट्रीस: द रोल ऑफ टीचर्स. कैमिलीस एंड स्टूडेंट्स प्रोफाइल, PLOS ONE, 16(7)

doi/10.1371/Journal.Pone.0253409

*शर्मा, एस.के. (2021). एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू जेंडर. सोशल कैटेगरी

एंड स्ट्रीम ऑफ स्टूडी स्कॉलर रिसर्च जर्नल फॉर ह्युमनिटी
साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज,9(43),10905-10912 ।

*सिंह,एन.एवं चौधरी,वी.(2022). माध्यमिक स्तरीय बच्चों के
व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर कामकाजी एवं गैर-
कामकाजी माताओं के प्रभाव का अध्ययन.UGC Care Listed &
Peer Received/Referred Journal ।

*यांग,शे.एंड वीरोंग,वी.(2022).द रोल ऑफ एकेडमिक रेजीलेंस
मोटिवेशनल इनटैनेसिटी एंड दीअर रिलेशनशिप इन इ एफ एल
लर्नर्स एकेडमिक अचीवमेंट.फ्रॉटियर्स इन साइकोलॉजी,12,

doi-/10.3389/fpsyg.2021.823537